DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO. 9415376545

B.A PART-I (Sub./Gen.)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No..... Date.. 07/12/2020

क्या राजनीतिशास्त्र विज्ञान है ?

राजनीतिशास्त्र का ज्ञान क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित है। राजनीतिशास्त्र राज्य और सरकार का क्रमबद्ध अध्ययन करता है। इसकी अपनी विशेष सामग्री और क्षेत्र है। जिसमें यह तथ्यों का संग्रह करता है उनको क्रमबद्ध ढंग से सम्बन्धित करता है, तथा उनके आधार पर सिद्धान्तों और नियमों का सामान्यीकरण करता है।

वैज्ञानिक पद्धतियों का अध्ययन राजनीतिशास्त्र के अध्ययन की निश्चित पद्धतियाँ हैं। यहाँ विद्वानों द्वारा तथ्यों का पता, पर्यवेक्षण द्वारा लगाया जाता रहा है। साथ ही सम्पूर्ण संसार समय एवं परिस्थिति के अनुसार प्रयोग करता रहा है। तथा प्रत्येक नया कानून, नीति और कार्य एक प्रयोग है। प्रजातंत्र समाजवाद, संयुक्त राष्ट्र संघ सब इसके प्रयोग हैं। साथ ही हम ऐतिहासिक तुलनात्मक पद्धतियों को भी अपनाते रहे हैं।

अध्ययन सामग्री के प्रकृति में स्थायित्व एवं एकरूपता– राजनीतिशास्त्र में तथ्यों के विषयों में पर्याप्त एकता पायी जाती है। यदि एकता की कुछ कमी है तो वह विषय की वैज्ञानिकता का अभाव नहीं है। बल्कि मानव स्वभाव में बदलाव होता रहता है। जैसा कि ब्राइस कहते हैं: "मानव-प्रकृति की प्रवृत्तियों में एकरूपता तथा समानता होती है जिसकी सहायता से हमें यह पता चलता है कि एक ही प्रकार के कारणों से प्रभावित होकर मनुष्य बहुधा एक ही प्रकार के कार्य करता है, फिर कार्यों का वर्गीकरण किया जा सकता है, उन्हें सम्बन्धित एवं श्रृंखलाबद्ध कर परिणाम निकाले जा सकते हैं।"

राजनीतिशास्त्र में भी निश्चित नियम और परिणाम होते हैं। ये नियम और परिणाम प्रवृत्तियों के सूचक होते हैं। जब हम कहते हैं कि असमानता से क्रान्तियाँ होती हैं, प्रजातंत्र अच्छी सरकार है, मताधिकार से राजनैतिक चेतना आती है। तब सापेक्षिक रूप से ये परिणाम सही हैं क्योंकि हम सामाजिक शास्त्रों में भौतिक शास्त्र की निश्चितता की आशा नहीं कर सकते।

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
B.A PART-I (Sub./Gen.)
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO. 9415376545
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No..... Date 07/12/2020

राजनीति विज्ञान की प्रमुख अध्ययन पद्धतियाँ

राजनीति विज्ञान में आगमनात्मक पद्धति का प्रमुख स्थान है। इस पद्धति में पहले तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते हैं और इसके बाद सामान्य सिद्धान्तों का निरूपण किया जाता है। इस पद्धति का प्रमुख प्रयोगकर्त्ता अरस्तू है। इस पद्धति में निम्न पद्धतियों का समावेश किया जाता है-

(1) पर्यवेक्षात्मक पद्धति – इसे अवलोकन पद्धति भी कहते हैं। यह व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित है। इसलिए अपेक्षाकृत ठोस होती है। इस पद्धति के अन्तर्गत शासन प्रणालियों और राजनीतिक संस्थाओं का नजदीक से अध्ययन किया जाता है। यह पद्धति बहुत प्राचीन है। राजनीति वैज्ञानिक अरस्तू ने इस पद्धति का प्रयोग किया जाता है।

(2) ऐतिहासिक पद्धति – राजनीति संस्थाओं का निर्माण नहीं किया जाता वरन् वे विकास का परिणाम होती हैं। अतः प्रत्येक राजनीति संस्था का एक अतीत होता है और उसके अतीत से परिचित होकर ही उसके यथार्थ स्वरूप का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए राजनीति विज्ञान में ऐतिहासिक पद्धति का बहुत अधिक महत्त्व है।

(3) तुलनात्मक पद्धति – इस पद्धति के अन्तर्गत अध्ययनकर्त्ता विभिन्न राज्यों, उनके संगठनों, नीतियों एवं कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन करता है। और इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर सामान्य राजनीतिक सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है। अरस्तू ने अपनी पुस्तक 'Politics' में 158 संविधानों का तुलनात्मक अध्ययन करके क्रांतियों के कारण और उनको रोकने के उपायों का उल्लेख किया है।

निगमनात्मक पद्धति – इस पद्धति में पहले सिद्धांत निरूपण किया जाता है; बाद में तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष निकाला जाता है। इसमें केवल एक ही पद्धति सम्मिलित की गई है। इस पद्धति के प्रमुख प्रयोगकर्त्ता प्लेटो हैं।

(प्रकरण समाप्त)

Scanned with CamScanner